लेख
Paper ID: SDES-IJIR 61

SDES-International Journal of Interdisciplinary Research
(Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN (O): 2582:7162
Crossref DOI: 10.47997/SDES-IJIR/31/12/2020
https://shreedadueducational.com/journal

विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों के बदलते प्रतिमान

(डा0चन्द्रमोहन सारस्वत)
प्राचार्य, रघुकुल कॉलेज ऑफ एजूकेशन,जयपुर
Corresponding Email: saraswat29@yahoo.com

सारांश -

शिक्षा उतनी ही पुरातन विचारधारा है, जितनी मानवीय प्रजाति अर्थात मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही शिक्षा का जन्म हुआ है। जब वास्तविक रूप से होने तथा बात करने की बात आती है तो शिक्षक का स्थान प्रमुख रूप से सामने आता है तथा शिक्षक का स्थान प्रमुख रूप से सामने आता है, तथा शिक्षक से यह आशा की जाती है कि वह बालक को मानसिक वृद्धि के साथ साथ सर्वागींण रूप से विकसित करने के लिऐ प्रोत्साहित करें।

मुख्य शब्ध : अभिकरणों, विधालयों, शिक्षकों, मूल्य, प्रतिमान,

प्रस्तावना -

जहॉ तक शिक्षक का अर्थ या परिभाषा का सम्बन्ध है तो किसी पढाने वाले अध्यापक, गुरू या उस्ताद को शिक्षक कहा जाता है। वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति या घटना से कुछ ना कुछ सीखने को मिलता है, किन्तु केवल उनकी बात करेंगे जिन्हें समाज की विभिन्न इकाईयों द्वारा शिक्षक के रूप में मान्यता मिल चुकी है, और जिनका पेशा सिखाने और समझाने का है और जो व्यक्ति अपनी शैक्षणिक तथा प्रशिक्षण योग्यताओं के द्वारा यह प्रमाणित कर चुके है कि वे पढाने और सिखाने में सिद्ध–हस्त हैं। शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता माना गया है। किसी बालक, युवा, समाज एंव देश को उन्नत बनाने में यदि सर्वाधिक योगदान किसी का है तो वह शिक्षक का है।

कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिक्षा के स्तर और राष्ट्रीय विकास मे शिक्षक के योगदान को जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं उसमें शिक्षक की गुणवत्ता, क्षमता आदि में चरित्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

राधा कृष्णन कमीशन (1948–49) ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुऐ लिखा कि "शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य वैज्ञानिक और विद्वतापूर्ण प्रयासों से सत्य की खोज करना है इसके अलावा जीवन मूल्यों की रक्षा करना भी इसका उद्देश्य है"।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने स्पष्ट किया था कि आवश्यक मूल्यों के क्षरण के बारे में बढती चिन्ता और समाज में फैल रही निराशा की भावना ने पाठ्यक्रम में परिवर्तन की ओर घ्यान आकृष्ट किया है।

मूल्य मनुष्य के कार्य एंव व्यवहार को प्रतिविम्बित करते हैं। मूल्य ही मनुष्य के जीवन को अर्थ, आकर्षण, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। हमारें व्यवहार का नियन्त्रण करते हैं। मनुष्य के मन की मूल प्रवृत्तियों का परिमार्जन मूल्यों द्वारा होता है। मूल्य ही मनुष्य की गुणात्मकता तथा मानसिक श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं।

मूल्य एक अमूर्त गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्व की ओर इंगित करता है। मूल्य शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों व्यक्तिगत व्यवहार, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं उंव कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। अपने शिष्यों के कल्याण के लिऐ पूर्णतः कटिवद्ध, परिश्रमी तथा सृजनशील शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असन्तोष एंव नगण्य लाभों के बावजूद अपने दायित्वो को समर्पण भाव से निभाया है। दुर्भाग्यवश अनुपयुक्त शिक्षकों के कारण शिक्षातंत्र पंगु हो गया है तथा वर्तमान मं हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, भावी शिक्षकों में शिक्षण प्रवीणता, कार्य मूल्य एंव मानवीय मूल्य विकसित करने में असफल रहे हैं। यह स्थिति विचारणीय है। शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा के संचालनार्थ सक्षम होना चाहिऐ।

मूल्य पीढी दर पीढी हस्तान्तरित होते हैं देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक समाज उंव राष्ट्र के मूल्यों में अन्तर होता है। मूल्य आघ्यात्मिक व लौकिक दोनों प्रकार के होते है जिन्हे शिक्षा द्वारा छात्रों में समाविष्ट किया जा सकता है। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली व आधुनिक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों की परिस्थितियों में रात दिन का अन्तर आ गया है। मूल्यों के प्रतिमान बदल रहे हैं। बढते बाजारवाद तथा पूँजीवाद के प्रभाव के कारण मूल्यों में बदलाव देखने में

आ रहा है। जहॉ तक लौकिक मूल्यों का प्रश्न है समाज मे व्यक्तिनिष्ठता का प्रभाव बढता जा रहा है। सामाजिक सरोकारों से लोग धीरे–धीरे दूर होते जा रहे हैं। इसी का प्रभाव वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर भी देखने को मिल रहा है। आज की शिक्षा प्रणाली नैतिकता पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित है। वर्तमान में शिक्षक इसी प्रवाह के साथ बढते जा रहे हैं। भारतीय परम्परा में यह मान्यता है कि शिक्षक केवल बालकों के भविष्य का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण करता है, परन्तु आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यह मान्यता केवल शब्दों में सिमट कर रह गई है।

आदर्श मूल्यों को किसी भी शिक्षक के लिऐ अपरिहार्य माना जाता है। नैतिक आदर्श तथा नीतिगत विचारधारा शिक्षक को एक आदर्श प्रहरी के रूप में समाज में स्थापित करती है तथा समान की हकदार बनाती है, तो विभिन्न **विद्यालयी** अभिकरण भौतिक सामाजिक परिवेश तथा लैंगिक भिन्नता माध्यमिक **विद्यालयी** शिक्षकों के मूल्यों को प्रभावित करते हैं। राजकीय एंव अनुदानित माध्यमिक **विद्यालयों** की अपेक्षा निजी प्रबन्धकीय शिक्षकों के मूल्यों के प्रतिमानों में बदलाव पाया गया वह शहरी माध्यमिक **विद्यालयों** के शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण माध्यमिक **विद्यालयों** के शिक्षकों के मूल्यों में अन्तर देखने को मिला। पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों के मूल्यों के प्रतिमानों में भी अन्तर देखने को मिला। मूल्यों के संदर्भ में किसी भी व्यक्ति से जो कि शिक्षक जैसे गरिमामय पद पर आसीन है उससे आदर्श विचारधारा तथा नीतिगत कार्य व्यवहार की अपेक्षा की जाती है, परन्तु अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न कारक शिक्षकों के मूल्यों के प्रतिमानों को प्रभावित करते हैं तथा शोध अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक अनुभव का मूल्यों के प्रतिमानों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पडता।

मानव जीवन में शिक्षा का अपना एक महत्व होता है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति आदम से मनुष्य बनता है तथा मनुष्य ही समाज का निर्माण करता है। मनुष्य औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक शिक्षा के माध्यम से अपनी मूल प्रवृतियों का परिमार्जन और परिशोधन कर

अपने व्यवहार में परिवर्तन कर पाता है तथा स्वंय के मूल्यों का विकास कर समाज में समायोजित होने मे सक्षम हो पाता है। शिक्षा ही उसको भौतिक,सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति की ओर ले जाती है। प्राचीन काल में मॉ परिवार, कुटुम्ब समाज तथा समुदाय के द्वारा बालक को नैतिकता, मूल्य तथा जीवन कौशल की शिक्षा दी जाती थी, बाद मे औपचारिक केन्द्रों में शिक्षा की व्यवस्था की गयी जो बदलते परिवेश के अनुसार **विद्यालयों** के रूप में अपना आकार ग्रहण कर चुकी है। इन शिक्षा केन्द्रों में एक निश्चित योग्यता धारक व्यक्ति को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता है। इन शिक्षकों के हाथ में बालक का भविष्य होता है जो कि राष्ट्र का भविष्य होता है। किसी भी **राष्ट्र** के बालक में जो गुण शिक्षा के माध्यम से दिये जाते हैं वे गुण ही कालान्तर में **राष्ट्र** की दशा व दिशा को निर्धारित करते हैं। अभिप्रायः यह है कि शिक्षकों पर किसी भी **राष्ट्र** का भविष्य बनाने तथा बिगाडने का समप्रत्यय आधारित होता है। अतः शिक्षकों में नैतिकता तथा मूल्यों का स्तर उच्च होना परम आवश्यक है। मूल्य विहीन व्यक्ति आत्मा रहित व्यक्ति की तरह होता है जिसके द्वारा मूल्यपरक शिक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती एंव मूल्य विहीन शिक्षा किसी व्यक्ति या **राष्ट्र** का विकास करने में सर्वथा अक्षम होती है।

अतः एक शिक्षक के मूल्य राष्ट्र के मूल्यों संवर्धक व संरक्षक होते हैं, किन्तु शोध अध्ययन के दौरान निष्कर्षतः देखने को मिला कि विभिन्न अभिकरण शिक्षकों के मूल्यों को प्रभावित करते हैं जिसका मुख्य कारण भौतिकवाद एकल परिवार,सामाजिक विघटन आदि है जो समाज तथा **राष्ट्र** के लिऐ चिन्ता जनक विषय है।

संदर्भ–

- रूहेला एस.पी (1968) – ट्रैडीशनल वैल्यूज ऑफ द इण्डियन सोसाइटी एण्ड कॉलेज स्टूडैण्टस एजूकेशन रिव्यू वॉल्यूम संख्या–11.।
- कठियार.पी.सी.(1976)– स्टडी ऑफ वैल्यूज एण्ड वोकेशनल प्रीफरैन्स आफ दी इण्टरमीडियेट क्लास स्टूडैण्टस इन यू.पी. पी.एच.डी एजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी, (1976).।
- बेगम साकिया एंव हाफिज.जे (1977)– ए. स्टडी आफ इण्डीविजुअल एण्ड सोशल वैल्यू– इण्डियन साइकोलोजी एक्सट्रैक्ट वोल्यूम(12)–1977.।
- एस.उमा(1985)– माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एंव शहरी बालक बालिकाओं के

नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, राज.वि.वि.1985.।

- आर्य सुलिजा (1993)– किशोरावस्था मे नैतिक मूल्यों के विकास के लिऐ एक प्रयोगात्मक अध्ययन– पी.एच.डी 1993, वनस्थली विद्यापीठ.।
- शर्मा,राजेश(1992–93)– विद्यालय संगठन की भिन्नता के संदर्भ में बालकों के नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन192–93.।
- कोहली(1995)–कार्यरत तथा कार्य न करने वाली महिलाओं की अभिवृत्ति एंव मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन.।
- श्रीवास्तव व विपिन कुमारी (2002)– उच्च एंव निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन.।